

श्रीमती अमला रुड़या ने बदली सैकड़ों गांवों की तस्वीर अब तक बना चुकी हैं 608 चेक डैम, जानी जाती है पानी माता के नाम से



बदलते परिवेश में महिलाएं आज हर क्षेत्र में सफलता का परचम लहरा रही हैं। ऐसी ही हुनरबाज, कर्मठ व लगनशील, समाजसेवी महिला हैं श्रीमती अमला रुड़या, जिन्होंने वॉटर हार्वेसिंग सिस्टम से चेक डैम बना कर राजस्थान के सैकड़ों गांवों की तस्वीर बदल दी। इस बदलाव से गांव वालों की लाइफ नये ट्रैक पर आ गयी है। आज सभी गांवों की कुल सालाना आय कीरब २००० करोड़ रुपए से ज्यादा है। अमला रुड़या का जन्म वर्ष १९४६ में एक संभ्रांत परिवार में हुआ था। उनके पिता श्री मदनमोहन तायलजी और माता

श्रीमती प्रभा तायलजी ने उन्हें बचपन में ऐसे संस्कार दिए, जिससे वे आज लोगों की जिंदगी बदलने का काम कर रही हैं। उनके पति अशोक रुड़या एक मशहूर उद्यमी रहे। १२वीं तक शिक्षा प्राप्त करने वाली अमला जी ने राजस्थान के १०० गांवों की किस्मत बदल कर रख दी है। वर्ष १९९८ में श्रीमती अमला रुड़या टीवी पर राजस्थान के गांवों में पड़े अकाल की भयावह तस्वीरें देखकर द्रवित हो गईं, और वहां पहुंच गयीं। प्रयोग के तौर पर अपने चैरिटेबल ट्रस्ट 'आकार फाउंडेशन' की मदद से मंदवार गांव में पहला चेक

डैम बनवाया। पानी मिलने से गांव के किसान एक साल में तीन-तीन फसलें उगाने लगे। घरों में पशुपालन का काम-धंधा भी शुरू कर दिया। उन्होंने उसी गांव में एक और चेक डैम बनाया। किसानों की आय एक साल में करीब १२ करोड़ रुपए तक पहुंच गयी। उत्साहित होकर उन्होंने ने प्रदेश के दूसरे गांवों में भी चेक डैम बनवाये। वे अब तक ७५० गांवों में 608 डैम बनवाये हैं। अमला रुड़या को गांवों के लोग 'पानी माता' के नाम से भी बुलाने लगे हैं। उनकी टीम ने अन्य राज्यों जैसे मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, ओडिशा, और छत्तीसगढ़ में दंतेवाड़





राजस्थान के लाडले

प्रारंभिक शिक्षा

बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, उत्तरांचल और उत्तर प्रदेश में भी चेक डैम बनाने का कार्य किया है। अमला रुड्या की योजना अपने जीवनकाल में कम से कम ३००० चेकडैम बनाने की है।

'आकार चैरिटेबल ट्रस्ट' प्राकृतिक स्रोतों जैसे कि पानी, बनस्पति और मिट्टी के संरक्षण के साथ-साथ शिक्षा को बढ़ावा देने का भी कार्य करता है। नशा मुक्ति, बाल विवाह, दहेज प्रथा व मृत्यु भोज का विरोध उनकी संस्था करती है। जनसंख्या नियंत्रण को लेकर किए जा रहे उपायों से वे संतुष्ट हैं। अमला रुड्या जी ने नारद भक्ति सूत्र, पातंजलि योग दर्शन, अष्टावक्र गीता जैसी कई रचनाएँ की हैं। शक्तिशाली नारी शक्ति २०२० के सर्वे "नारायणी नमः" में फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट सर्वे द्वारा समाजिक स्थिति, प्रभाव, प्रतिष्ठा, छवि, उद्देश्य, समाज के लिए प्रयास, देश के आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था पर प्रभाव जैसे १० मानदंडों पर किए गए स्टेकहोल्ड सर्वे में देश की प्रमुख २० शक्ति शाली महिलाओं में अमला रुड्या प्रमुख स्थान पर हैं।

श्रीमती अमला रुड्या के ट्रस्ट ने पानी के साथ शिक्षा को भी गंभीरता से लिया है। उन्होंने ने राजस्थान के रामगढ़ में प्री-प्राइमरी से लेकर हायर



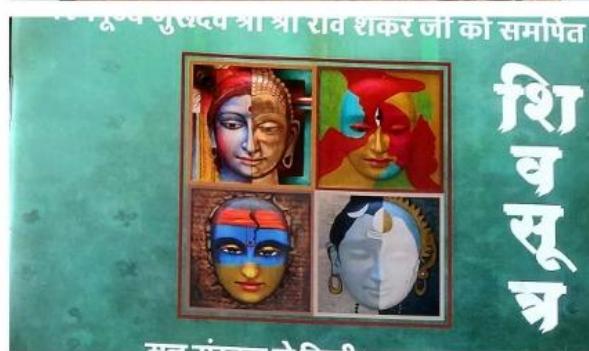
सेकंडरी तक मॉडल स्कूल स्थापित किये हैं। उन्होंने करीब ८०० टीचिंग ऐड्स भी विकसित किये हैं। उन्होंने मुंबई में एक हर्बल गार्डन को एक खूबसूरत जगह में बदल दिया है, जहां सूखी बच्चों को प्रकृति को करीब से जानने का मौका मिलता है। वर्ष २०११ में रुड्या को सामुदायिक सेवा और सामाजिक उत्थान की श्रेणी में लक्ष्मीपत सिंघानिया, आईआईएम लखनऊ राष्ट्रीय नेतृत्व पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वर्ष २०१६ में उन्हें वीमन ऑफ वर्थ सोशल अवार्ड श्रेणी के लिए नामांकित किया गया था। २०१८ में उन्होंने इंडिया आई इंटरनेशनल ह्यूमन राइट्स ऑफिवर अचीवमेंट अवार्ड भी २०१८ प्राप्त किया है। श्रीमती अमला रुड्या का कहना है कि डैम में जमा पानी का इस्तेमाल खेती के लिए होता है। किसान अब एक साल में तीन फसलों की खेती करते हैं। रुड्या का कहना है कि आने वाले समय में वे और उनकी टीम अन्य राज्यों में भी ऐसा ही काम करेगी। उनकी टीम छत्तीसगढ़ के दतेवाड़ा में भी काम कर रही है वे मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र के कई इलाकों में भी इस तरह का काम कर चुकी हैं। इसके साथ ही अमलाजी अन्य सामाजिक कार्यों में भी रुचि लेती हैं। इस प्रकार वे राजस्थान के साथ-साथ पूरे देश में सक्रिय हैं।



अष्टावक्र गीता



हिन्दी काव्य रूपीदरण
प्रधान रुद्या



पातंजली योग दर्शन

परम पूज्य गुरुदेव को समर्पित

हिन्दी काव्यानुवाद - अमला रुड्या

ગ્લોબલ કુચ્છ અને કુચ્છમિત્રનું સુખનું સરનામું અભિયાન

આકાર ચેરિ. ટ્રસ્ટ કુચ્છમાં ૫૦થી વધુ જળમંદિર બનાવશે

ભુજ તા ૨૮ : કુચ્છને હરિયાણું અને પાણીદાર બનાવવા માટે ચાલી રહેલા ગ્લોબલ કુચ્છ અને કુચ્છમિત્રના સુખના સરનામા અભિયાનને વગવા બનાવવા માટે મુંબઈના આકાર ચેરિટેબલ ટ્રસ્ટ દ્વારા કચ્છમાં ૫૦થી વધુ જળમંદિરનું નિર્માણ કરવામાં આવશે. પાચ સ્થળે ચેકડેમના નિર્માણ સાથે જળમંદિરનું નિર્માણકાર્ય આરંભી પણ દેવામા આવ્યું છે. પાનીવાલી મા તરીકે જાણીતા આ ટ્રસ્ટના મોવડી અમલા રૂઈયા ડિસેઝલમાં કુચ્છની મુલાકાતે આવી રહ્યા છે. તેમની વિશેષ ઉપસ્થિતીમાં નવા કામોનો આરંભ કરવામાં આવશે.

ગ્લોબલ કુચ્છના અગ્રથી ગોવિંદભાઈ ભાનુશાલીએ વિગતો આપતાં જણાવ્યું કે, મુંબઈના આકાર ચેરિટેબલ ટ્રસ્ટે જળમંદિરના નિર્માણના આદરેલા અભિયાન અંતર્ગત મંદુ, રાજપર, ખારુઆ, ભારાપર(ભાડરા) અને ઉસ્લિયામાં ચેકડેમ બનાવી આ કામનો આરંભ પણ કરી દેવામાં આવ્યો છે. જળમંદિર બનાવવાનો



**પાંચ સ્થળે કાર્ય આરંભી પણ દેવાયું:
પાનીવાલી મા તરીકે ઓળખાતાં
અમલા રૂઈયા ડિસે.માં કુચ્છ આવે છે**

હેતુ મહત્તમ પ્રમાણમાં વરસાદી પાણીનો સંગ્રહ કરી જળસંચયના કાર્યોને અગ્રતા આપવાનો છે.

રાજસ્થાનના દુષ્કાળગ્રસ્ત વિસારોને પાણીદાર બનાવી આ વિસારમાંથી લોકોના હિજરતનો દોર અટકાવવામાં મહત્વની ભૂમિકા બજ્યી છે, એવા આકાર ચરિટેબલ ટ્રસ્ટના મોવડી અને

જળસંચયના કાર્યો થકી પાનીવાલી માનું બિરુદ્ધ મેળવી ચુકેલા અમલા રૂઈયા ૧૮ અને ૧૯ ડિસેમ્બરે કુચ્છની મુલાકાતે આવશે અને જળમંદિરના હાથ ધરાનારા નવા કામોનો વિધિવત પ્રારંભ કરાવશે. એ પૂર્વ આકાર ચેરિ. ટ્રસ્ટના વિનોંદ ગુર્જરે માંડવી તાલુકાની મુલાકાત વર્ષ હાથ ધરવા પાત્ર નવા કામો અંગે જરૂરી સમીક્ષા હાથ ધરી ભાવિ આયોજનોનો ક્યાશ કાઢશે. આ કામો માટે બ્રહ્માકુમારી સંસ્થાનનો વિશેષ સહયોગ મળ્યો છે.

નોંધનિય છે કે, ગ્લોબલ કુચ્છ અને કુચ્છમિત્રના સુખના સરનામા અભિયાન તળે ચાલી રહેલી ઝુંબેશ ઝડપભેર આગળ ધ્યે રહી છે. વૃક્ષારોપણની સાથે જળસંચયના કામોને ગતિશીલ બનાવવા માટે આકાર ચેરિ. ટ્રસ્ટ સહિતની સંસ્થાઓનો સારો ગણી શકાય તેવો સહયોગ મળ્યો છે. આવા અભિયાનો થકી કુચ્છને નંદનવન બનાવવાની ઝુંબેશને નોંધનીય રીતે ગતિ મળશ તેવો સબજ આશાવાદ જાગૃત થયો છે.